# VISION IAS

www.visionias.in

VISION IAS
M N 0 5 SEP 2022 No. 3
RECEIVED

## GENERAL STUDIES (TEST CODE : 1838)

| | | | |
|---|---|---|---|
| Name of Candidate | BAJRANG PRASAD | | |
| Medium Eng./Hindi | HINDI | Registration Number | 578292 |
| Center | MN | Date | 5/9/2022 |

### INDEX TABLE

| Q. No. | Maximum Marks | Marks Obtained |
|---|---|---|
| 1 | 10 | |
| 2 | 10 | |
| 3 | 10 | |
| 4 | 10 | |
| 5 | 10 | |
| 6 | 10 | |
| 7 | 10 | |
| 8 | 10 | |
| 9 | 10 | |
| 10 | 10 | |
| 11 | 15 | |
| 12 | 15 | |
| 13 | 15 | |
| 14 | 15 | |
| 15 | 15 | |
| 16 | 15 | |
| 17 | 15 | |
| 18 | 15 | |
| 19 | 15 | |
| 20 | 15 | |

**Total Marks Obtained:**

Remarks:

## INSTRUCTIONS

1. Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Registration Number and Test Code).
   उत्तर पुस्तिका में सूचनाएं भरना आवश्यक है (नाम, प्रश्न–पत्र कोड, विद्यार्थी क्रमांक आदि)।
2. There are **TWENTY** questions printed in **ENGLISH & HINDI**
   इसमें बीस प्रश्न हैं अंग्रेजी और हिन्दी में छपे हैं।
3. **All questions are compulsory.**
   सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
4. The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
   प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिए गए हैं।
5. Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate, which must be stated clearly on the cover of this Question-Cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other that the authorized one.
   प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहिए जिसका उल्लेख आपके प्रवेश पत्र में किया गया है और उस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न–सह–उत्तर (क्यूसीए) पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिए। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिए गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
6. Word limit in questions, if specified, should be adhered to.
   प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिए।
7. Any page or portion of the page left blank in the Question-Cum-Answer Booklet must be clearly struck off.
   उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिए।

16-B, 2nd Floor, Above National Trust Building, Bada Bazar Marg, Old Rajinder Nagar, Delhi-110060

Plot No. 857, 1st Floor, Banda Bahadur Marg (Opp Punjab & Sindh Bank), Dr. Mukherjee Nagar Delhi- 110009

# EVALUATION INDICATORS

1. Contextual Competence
2. Content Competence
3. Language Competence
4. Introduction Competence
5. Structure - Presentation Competence
6. Conclusion Competence

**Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:**

1.

2.

3.

4.

5.

6.

**All the Best**

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

1. The Chalukyan architecture uniquely epitomises the grandeur and hybrid characteristic style of temple building. Elaborate. **(150 words) 10**
चालुक्य स्थापत्य कला विशिष्ट रूप से मंदिर निर्माण की वैभवपूर्ण और संकर अभिलक्षणिक शैली का प्रतीक है। सविस्तार वर्णन कीजिए।

चालुक्य स्थापत्य कला जिसे मंदिर निर्माण की बेसर शैली कहा जाता है का उदय बादामी, वेंगी के क्षेत्र के आस-पास हुआ।

चालुक्य स्थापत्य कला मंदिर निर्माण की नागर एवं द्रविड़ शैली का मिश्रण थी।

चालुक्य स्थापत्य कला की विशेषताएँ -

क्षेत्र - बादामी, वेंगी, एलोरा का क्षेत्र-

मंदिर स्थापत्य -
→ स्तम्भों के सहारे टिका विशाल मंडप
→ गर्भगृह के ऊपर विमान एवं पंचायतन शैली का प्रभाव
→ स्तम्भों एवं मंदिर की दीवारों पर उत्कृष्ट उत्कीर्णन,

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

→ शिखर एवं नक्काशी पर नागर शैली का प्रभाव

प्रमुख उदाहरण -

→ बादामी के चालुक्य - कैलाश मंदिर
राष्ट्रकूटों द्वारा निर्मित - मंदिर समूह
होयसल मंदिर - हलेबिड का होयसलेश्वर मंदिर

चित्रकला - इन्होंने चित्रकला एवं मूर्तिकला को बढ़ावा दिया जिसे मंदिरों की दीवारों पर देखा जा सकता है।

चालुक्य शैली के मंदिरों को वर्तमान में संरक्षण की आवश्यकता है जो पर्यटन के दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।

VISION IAS™

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

2. The success or failure of a political movement is not always determined by the achievement of its stated goals. Discuss in light of the Ghadar movement.

**(150 words) 10**

किसी राजनीतिक आंदोलन की सफलता या विफलता सदैव उसके घोषित लक्ष्यों की प्राप्ति से निर्धारित नहीं होती है। गदर आंदोलन के आलोक में चर्चा कीजिए।

भारत के बाहर भारतीय नागरिकों के शोषण के विरुद्ध एवं भारतीय आज़ादी के लिए 1913 में कनाडा से 'गदर आंदोलन' की शुरुआत हुई।

गदर आंदोलन की विशेषताएँ -

→ इसमें लाला हरदयाल, सोहन सिंह भाकना, मैडम भीकाजी कामा आदि शामिल थे।

→ इन्होंने 'गदर' नामक पत्र प्रकाशित किया

→ 'इंडिया हाउस' संस्थान आदि द्वारा लोगों को संघर्ष में शामिल करने का प्रयास

→ सशस्त्र संघर्ष से अंग्रेजों को परास्त करके 'गणराज्य' (भारत) स्थापना लक्ष्य।

→ लक्ष्य पाने में असफलता

गदर आंदोलन की विफलता
→ भारत में मेरठ षड्यंत्र में विफलता
↳ लोगों को एकजुट कर पाने में विफलता

## गदर आंदोलन का महत्व

→ स्वदेशी आंदोलन के बाद शांत पड़ी स्वतंत्रता संग्राम की लौ को जगाया.
→ भारतीय आजादी को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा का विषय बनाया,
→ भारतीय क्रान्तियों को एकत्रित करने का प्रयास किया,
→ देश के अन्दर उग्रवादी विचार को नई ऊर्जा दी
↳ धर्मनिरपेक्ष होने के कारण काफी चर्चा में रहा.

इसी धारा पर आगे भारत छोड़ो आंदोलन के 'आज़ाद हिंद सेना' ने भारतीय आजादी में मददगार हुई।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

3. Discuss the ways in which Gandhian conceptualisation of Sarvodaya influenced Vinoba Bhave's Bhoodan movement. (150 words) 10
उन तरीकों की विवेचना कीजिए जिनसे सर्वोदय की गांधीवादी अवधारणा ने विनोबा भावे के भूदान आंदोलन को प्रभावित किया था।

1951 में पोचमपल्ली से शुरु विनोबा भावे का भूदान आंदोलन भूमिहीनों को जमीन उपलब्ध कराने के समतावादी एवं गाँधीवादी विचारधारा पर आधारित था।

वह तरीके जो भूदान आंदोलन को प्रभावित किए-

भूमि का समावेशी चरित्र- वह मानते थे कि धरती सभी की है, कोई इसे साथ लेकर नहीं जायेगा। अतः हमें इसे सामाजिक न्याय हेतु लोगों के बीच बाँटना चाहिए।

गाँधी जी सर्वोदय अवधारणा- गरीबों के प्रति करुणा एवं उदारता का भाव मानव जीवन की सबसे बड़ी प्रेरणा होनी चाहिए।

भू-दान एवं ग्रामदान हेतु गाँव - गाँव जाकर व्यक्तिश: लोगों से मिलना एवं बैठक बुलाना - इससे लोग प्रभावित हुए एवं सामूहिक सहमति से ग्राम दान को सफल बनाने में सहयोग किए।

स्वतंत्रता आंदोलन के क्रांतिकारियों से सहयोग लेना - इससे जनता में सकारात्मक प्रभाव पड़ा.

भूदान का प्रभाव
- → भूमिहीनों को भूमि की उपलब्धि;
- → सामाजिक समता स्थापित करने की कोशिश।
- → पूरे भारत में इस विचार का तेजी से प्रसार
- ↳ भारत सरकार के भूमि सुधार प्रयासों में प्रेरक की भूमिका।

भूदान आंदोलन भारतीय समाज के समावेशी चरित्र का एक बेहतरीन उदाहरण है।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

4. Bring out the evidences, which led to the Plate Tectonics Theory. Also, discuss how this theory explains the movement of plates.

**(150 words) 10**

उन साक्ष्यों को उजागर कीजिए जिनसे प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांत का प्रतिपादन हुआ। साथ ही, विवेचना कीजिए कि यह सिद्धांत किस प्रकार प्लेटों की गति की व्याख्या करता है।

मार्गन द्वारा प्रतिपादित प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांत महासागरीय एवं महाद्वीपों के वितरण हेतु पृथ्वी के मैंटल के ऊपर उपस्थित कुछ महत्वपूर्ण भूखण्डों को जिम्मेदार मानता है जो हमेशा चलायमान है।

प्लेट- विवर्तनिकी के साक्ष्य -

कुछ स्थलाकृतियों में समानता -

द० अमेरिका एवं अफ्रीका की स्थलाकृतिक संरचना उन्हें कभी पहले एक साथ उपस्थिति होने का प्रमाण देती है।

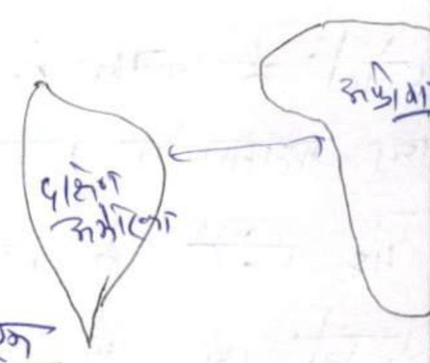


टिलाइट- घाना(अफ्री०) एवं ब्राजील (द० अमेरिका) में टिलाइट की समान उपस्थिति,

लेमूरिया प्रजाति - यह भारत, दक्षिण अफ्रीका

एवं ऑस्ट्रेलिया में पाई जाने वाली प्रजाति है।

ग्लोसा निक्षेप - यह आश्चर्यजनक रूप से अफ्रीका के पश्चिमी एवं द० अमेरिका के पूर्वी तट पर मिलता है।

प्लेट गति की व्याख्या -

→ पृथ्वी मेंं सात बड़े प्लेटों पर महासागर एवं महाद्वीपों का संचालन

→ प्लेटों के अभिसरण से पर्वतों का निर्माण होता है जैसे - हिमालय, एंडीज

→ प्लेटों के ~~आपस में~~ अपसरण के कारण मध्य महासागरीय कटक का निर्माण जैसे - अटलांटिक में

→ ~~यह~~ रिज प्लेटों से समान दूरी पर स्थित चट्टानों की आयु में समानता (भूचुम्बकीय (Basalt))

→ ~~इसके~~ प्लेटों के अभिसरण से ज्वालामुखी एवं पारिशांत पेटी।

भू-अवसंरचना की प्लेट विवर्तनिकी काफी हद तक वैज्ञानिक व्याख्या करता है।

# VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

5. Give an account of the formation of Abyssal Plains and highlight the relief features found on these plains. **(150 words) 10**
वितलीय मैदानों के निर्माण का विवरण दीजिए और इन मैदानों पर पाए जाने वाले उच्चावच संबंधी लक्षणों पर प्रकाश डालिए।

महाद्वीपीय मग्नढाल के बाद महासागरों में 3 से 6 किमी० गहराई के मध्य वितलीय मैदान पाए जाते हैं।

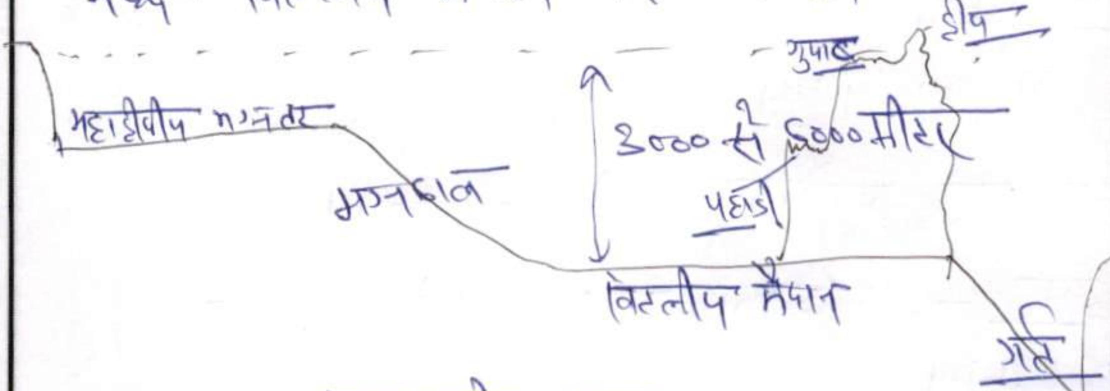


महासागरीय उच्चावच

वितलीय मैदान का निर्माण -

महाद्वीपों से अवसादों का आना - नदियों द्वारा बहाए गए अवसादों से यह क्षेत्र नालों से लाए अवसाद के कारण समतल रहता है।

विवर्तनिकी क्रियाएँ - मध्य महासागरीय प्लेटों के अवतलन, अभिसरण के कारण इसमें उच्चावच पाए जाते हैं। ज्वालामुखी उद्गार से उच्चावच निर्माण

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

→ मृदा की आयु अन्य चट्टानों से अपेक्षाकृत नवीन होती है।

→ यह क्षेत्र खनिज समृद्ध होते हैं।

इत्यादि -

महासागरीय पहाड़ियाँ - यह समुद्र के नीचे सतह पर उपस्थित ऊँची पहाड़ियाँ हैं।

गुयाट - इनका निर्माण ज्वालामुखी द्वीप श्रृंखला के घर्षण के उपरांत होता है।

द्वीप - यह सतह से बाहर निकले स्थल हैं। जैसे- हवाई द्वीप

पॉलीमेटालिक नोड्यूल्स की जानकारी व अन्वेषण हेतु भारत 6000 मी॰ गहराई पर समुद्रयान परियोजना शुरू कर रहा है।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

6. What are the geographical and climatic conditions required for tea cultivation? In this context, discuss the reasons for the introduction of tea cultivation in the Duars region of the Himalayas by the British.

**(150 words) 10**

चाय की खेती के लिए आवश्यक भौगोलिक और जलवायविक दशाएं क्या हैं? इस संदर्भ में, अंग्रेजों द्वारा हिमालय के दुआर क्षेत्र में चाय की खेती शुरू करने के कारणों की विवेचना कीजिए।

भारत एक रोपण फसल के रूप में चाय का दुनिया में चौथा सबसे बड़ा निर्यातक है।

आवश्यक भौगोलिक एवं जलवायविक दशाएँ—

तापमान – 20 से 25°C तापमान की आवश्यकता

वर्षा – 150 से 300 सेमी० की वर्षा आवश्यक

मृदा – अपवाहित कार्बनिक मृदा

क्षेत्र – वर्षण के साथ ही अच्छी जल निकासी वाला क्षेत्र अति आवश्यक है।

अनुकूल भौगोलिक क्षेत्र – दार्जिलिंग, असम (84%) एवं नीलगिरि पहाड़ी क्षेत्र (16%)

- उष्ण एवं उपोष्णकटिबंधीय जलवायु की आवश्यकता

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

अंग्रेजों द्वारा दुआर क्षेत्र में चाय की खेती के कारण -

-> भौगोलिक अनुकूलता - यह पहाड़ी क्षेत्र समस्त जलवायविक आवश्यकताओं के साथ पहले से ही चाय का उत्पादन कर रहा था।

-> बिहार, प० बंगाल से सस्ते श्रम की उपलब्धता

-> बंदरगाह की नजदीकी जिससे निर्यात किया जा सके और - कोलकाता बंदरगाह

-> परिवहन के साधन

-> श्रमिकों की उत्पादन में कुशलता, भारत अपने अद्वितीय चायों की खेती के कारण G.I. tag हासिल कर रहा है

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

7. Briefly bring out the distinction between flash droughts and conventional droughts. Also, examine the reasons behind the increasing vulnerability of India to flash droughts. **(150 words) 10**

आकस्मिक सूखा और पारंपरिक सूखा के मध्य अंतर को संक्षेप में स्पष्ट कीजिए। साथ ही, आकस्मिक सूखे के प्रति भारत की बढ़ती सुभेद्यता के कारणों का परीक्षण कीजिए।

आकस्मिक सूखा का सम्बंध जलवायु परिवर्तन जनित कारणों से वर्षा प्रतिरूप में बदलाव ; मिट्टी के निर्माण एवं सिंचाई के अभाव से है।

पारंपरिक सूखा सामान्यतः मौसम की आवर्ती प्रकृति से सम्बन्धित होता है यह अल्पकालिक होता है।

| आकस्मिक सूखा | पारंपरिक सूखा- |
| --- | --- |
| → मानव प्रेरित एवं जलवायु परिवर्तन का प्रभाव | → जलवायु चक्र के कारण और - था बुंदेलखण्ड क्षेत्र |
| → जल स्तर जल के अधिक दोहन के कारण था | → यह वर्षा एवं वाष्पन के बीच असंतुलन |
| → यह मानवप्रेरित होता है | → यह प्रायः प्राकृतिक होता है। |

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

सूखे के प्रति भारत की बढ़ती सुभेद्यता के कारण -

① मृदा निम्नीकरण एवं अति सतही जल दोहन -
भारत में कृषि द्वारा 85% सतही जल दोहन
→ अवैज्ञानिक कृषि पद्धति
⇓
हरियाणा, पंजाब में धान, गन्ने की फसल

② बदलता मौसम एवं वर्षा प्रतिरूप - कुछ ही दिन में अधिक वर्षा
⇓
जल का बह जाना & रिसाव कम

③ हिमालयी पिघलते ग्लेशियर
⇓
बारहमासी नदियों पर प्रभाव

④ एल-नीनो की घटनाएँ

⑤ भौतिक तापन से नदियों का सूखना - खाद्य सुरक्षा पर प्रभाव

इन सूखा से निपटने हेतु एक नीति का निर्माण करना चाहिए।

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

8. Though various initiatives have been taken to ensure social security for informal workers in India, there still exist gaps which need to be plugged. Discuss. **(150 words) 10**

हालांकि भारत में अनौपचारिक श्रमिकों के लिए सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु विभिन्न पहलें शुरू की गई हैं, फिर भी कुछ कमियां मौजूद हैं जिन्हें दूर करने की आवश्यकता है। चर्चा कीजिए।

भारत में 90% श्रमबल अनौपचारिक श्रमिक के रूप में नियोजित है। कोरोना महामारी ने इनकी कुअंश्य सामाजिक सुरक्षा को उजागर किया है।

भारत में प्रमुख पहलें -

1. कौशल मानचित्रण - यह श्रमिकों को रोजगार प्राप्त करने में सहायता प्रदान करेगा एवं सरकार के समर्पित नीति निर्माण में,

2. ई-श्रम पोर्टल - असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों हेतु डाटाबेस पोर्टल। अब तक 38Cr में 28 Cr. पंजीकृत, इससे प्रत्यक्ष सहायता अन्तरण में सहूलियत.

3. सामाजिक सुरक्षा अधिनियम-2020 - इसमें सामाजिक सुरक्षा कोष। का प्रावधान एवं नियत

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

अवधि वाले श्रमिक को समान सुविधा
4. PM मानधन योजना - वृद्धावस्था में बीमा की सुरक्षा प्रदान करना,
5. मनरेगा में अवसर देने जैसे - जल-जीवन मिशन द्वारा

मौजूद कमियाँ
- श्रम का अनौपचारीकरण हो रहा है, विनिवेश के कारण.
- अकुशल श्रम की बहुलता अधिक,
- भारत में 300 से अधिक वाले कर्मचारियों को ही छंटनी हेतु सरकार से अनुमति की जरूरत
- निगरानी का अभाव; श्रमिकों के कौशल हेतु पुनर्कौशल आदि के लिए कोष नहीं

→ महिला श्रमबल पर ध्यान जोर नहीं

इसमें PM कौशल योजना एवं श्रमगहन क्षेत्रों को MSME के साथ बढ़ावा देना चाहिए।

VISION IAS™

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

9. Critically assess the government's move on raising the age of marriage of women in India from 18 to 21 years. (150 words) 10

भारत में महिलाओं के विवाह की आयु 18 वर्ष से बढ़ाकर 21 वर्ष करने के सरकार के कदम का समालोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए।

जया जेटली समिति की अनुशंसा पर सरकार ने महिलाओं की विवाह आयु को 18 से 21 वर्ष करने हेतु संसद में बिल पेश किया है।

महिलाओं की उम्र बढ़ाने का औचित्य -

1). उद्यमिता एवं रोजगार अवसरों के क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ेगी -

एक सर्वे के अनुसार - विवाहोपरांत महिलाएं कृषि में ज्यादा संलग्न हो रही हैं।

| | विवाहित | अविवाहित |
|---|---|---|
| कृषि | 56 | 27 |
| उद्योग | 21 | 22 |
| सेवा क्षेत्र | 23 | 46 |

2). शिक्षित नारी का उत्पीड़न (घरेलू) कम होगा (NFHS-5 - 30%)

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

4). मातृमृत्यु दर में कमी - अल्पायु माहिलाएँ की
5). प्रसव के दौरान मृत्यु अधिक
6). बाल विवाह में कमी
7). पुरुषों के साथ समानता

उम्र बढ़ाने में चुनौतियां / कमियाँ -

→ कोई गारंटी नहीं कि बाल-विवाह रुकेगा (अभी भी 29% बालविवाह है 18 वर्ष आयु में)

→ कमजोर माता-पिता अपने बेटियों को पढ़ाने में अक्षम ⇒ इसका क्रियान्वयन धरातल पर कम

→ धार्मिक तनाव - मुस्लिमों में युवती के यौनारम्भ को ही विवाह के लिए योग्य माना जाता है।

हमें आयु बढ़ाने के साथ ही उनके सशक्तिकरण आदि पर ज्यादा ध्यान देना होगा तभी यह प्रयास अपने लक्ष्य तक पहुंचेगा।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

**10.** Reservation for locals in private sector has again brought the debate around regionalism into focus. In this context, examine whether regionalism is a threat to national integration. **(150 words) 10**

निजी क्षेत्रक में स्थानीय लोगों के लिए आरक्षण के मुद्दे ने क्षेत्रवाद के इर्द-गिर्द होने वाली बहस को पुन: केंद्र में ला दिया है। इस संदर्भ में, परीक्षण कीजिए कि क्या क्षेत्रवाद राष्ट्रीय एकता के लिए खतरा है।

हाल में हरियाणा सरकार ने निजी क्षेत्र की कम्पनियों में स्थानीय लोगों के लिए 75% आरक्षण देने का आदेश दिया है।

अन्य राज्य - तेलंगाना, तमिलनाडु आदि

क्षेत्रवाद राष्ट्रीय एकता के लिए खतरा के रूप में -

→ भारतीय संविधान का अनुच्छेद 19(1)(g) भारत में कहीं वृत्ति का अधिकार देता है।
→ केवल संसद 'निवास की शर्त' का कानून बना सकती है।

⇓

इस पर राज्यों की निषेधात्मक प्रवृत्ति क्षेत्रवाद को बढ़ाकर राष्ट्रीय एकता को प्रभावित करेगी

→ नागरिकों का ~~सं~~ संचार बाधित,
→ 'भूमिपुत्र' की अवधारणा को बढ़ावा,
→ राज्यनिष्ठा को बढ़ावा - जो देश में

कृत्रिम विभाजन बढ़ाएगा,
→ अन्य राज्यों द्वारा प्रतिघाती कदम
→ ~~संघवाद~~ सहकारी संघवाद प्रभावित,
→ कौशल को महत्व नहीं जिससे उत्पादन लागत बढ़ेगा → कम्पनियों का पलायन ~~(क्षेत्र~~
क्षेत्रवाद राष्ट्रीय एकता के लिए खतरे-

→ अपने राज्य के निवासियों के प्रति राज्यों का संवैधानिक जवाबदेही
→ रोजगार का संकट के समाधान हेतु,
→ क्षेत्रीय विकास राष्ट्रविकास को प्रेरित करता है।
→ निजी क्षेत्र के आरक्षण पर संविधान रोक नहीं लगाता है।

वर्तमान में यह मामला सुप्रीम कोर्ट में है। हमें रचनात्मक कदम उठाना चाहिए जो समग्रतः राष्ट्रकल्याण में हो।

11. Explain how agricultural surplus, growth of crafts and trade, and growing population led to the second urbanisation in ancient India.

(250 words) 15

व्याख्या कीजिए कि किस प्रकार कृषि अधिशेष, शिल्प और व्यापार की वृद्धि तथा बढ़ती जनसंख्या के कारण प्राचीन भारत में द्वितीय नगरीकरण हुआ है।

हड़प्पा सभ्यता (प्रथम नगरीकरण) के पश्चात् भारत में द्वितीय नगरीकरण मौर्यकाल के दौरान हुआ। (इतिहास)
यह वास्तव में बौद्धधर्म की कुछ प्रवृत्तियों एवं मौर्य शासकों की राजनीतिक कुशलता एवं प्रशासनिक दक्षता का परिणाम था।

द्वितीय नगरीकरण के कारणों का विवेचन -

① कृषि अधिशेष - अपने भौगोलिक विस्तार के कारण मौर्य साम्राज्य के पास पहले का सर्वाधिक उपजाऊ क्षेत्र था।

- गंगा की तराई का उपजाऊ मैदान
- सिंधु का डेल्टा क्षेत्र

⇒ इससे कृषि तकनीकों के उपयोग से अधिकाधिक उत्पादन संभव हुआ।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

शिल्प एवं व्यापार- कौटिल्य के अर्थशास्त्र में मौर्य साम्राज्य के रोमन सभ्यता, दक्षिण एशिया के साथ व्यापार के साक्ष्य मिलते हैं। कपास, मसालों, कीमती आभूषणों का व्यापार किया जाता था।

शिल्प- मौर्यों ने खासकर अशोक ने शिल्प के क्षेत्र में काफी उत्कृष्ट कार्य किया।

स्तूप - साँची का स्तूप, भरहुत, बोधगया
विहार - सारनाथ में
गुफा - लोमस ऋषि गुफा
स्तम्भ - रमपुरवा आदि में राजादेशों का उत्कीर्ण उकेरा
लकड़ी के मंदिर - कुम्हरार में

बढ़ती जनसंख्या- बढ़ती आबादी का उपयोग अधिकाधिक कृषि के दोहन एवं जंगलों को साफ करने में किया गया।

बौद्धों की पशु वाली निषेध की नीति
ने लोगों को कृषि में अधिशेष
उत्पादन को प्रेरित किया।

⇓

अधिशेष उत्पादन से गैर-कृषकों हेतु
भी खाद्यान्न सुरक्षा सुनिश्चित हुई

⇓

जिससे राज्य साम्राज्य विस्तार एवं अन्य
क्षेत्रों में विकास को प्रेरित हुआ।

इस प्रकार द्वितीय नगरीकरण
के पश्चात भारतवर्ष निरन्तर इतिहास
में आगे बढ़ता गया।

**12.** India of the 18th century failed to make progress economically, culturally and socially at a pace, which would have saved the country from collapse. Comment. **(250 words) 15**

18वीं शताब्दी का भारत आर्थिक, सांस्कृतिक और सामाजिक रूप से उस गति से प्रगति करने में विफल रहा, जो देश को पतन से बचा सकता था। टिप्पणी कीजिए।

18 वीं सदी भारतीय मध्यकालीन इतिहास की दृष्टि से महत्वपूर्ण है क्योंकि इस समय लंबे समय से स्थापित मुगल साम्राज्य के पतन एवं भारत में औपनिवेशिक शक्तियों के आगमन के संक्रमण का दौर था।

प्रगति में विफलता के प्रतीक-

(1) राज्यों के बीच आपसी टकराव- मराठों, निजामों, सिक्खों, मुगलों आदि शक्तियों के बीच टकराव जिसका फायदा अंग्रेजों के पहले अहमद शाह अब्दाली & नादिर ने उठाया था।

इसी राजनैतिक विफलता का फायदा आगे EIC (ईस्ट इंडिया कम्पनी) ने एक-एक

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

मराठे राज्यों को परास्त करने में किया।

1854 में प्लासी विजय; बक्सर का युद्ध, मराठा विजय (1817), मैसूर विजय (1799) आदि

(2) सामाजिक विफलता - जनता में आधुनिक विचारों का अभाव, स्वार्थवादी प्रवृत्ति, धार्मिक और आडंबर आदि ने उसे स्वयं तक सीमित रखा। 1757 के विद्रोह में भारी विफलता को देखा गया।

(3) सांस्कृतिक जागृति की विफलता - लोगों में राष्ट्रवादी भावना की कमी, साम्प्रदायिकता, स्वयं के धर्म की श्रेष्ठता के कारण विभाजन का लाभ बाहरी शक्तियों ने उठाया।

यह कारण भारत को न तो औद्योगिक क्रांति का लाभ उठाने दिए, न ही वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा ⇒ इस प्रकार भारत का पतन शुरू हुआ।

परन्तु 19वीं सदी के सकारात्मक पहलू -

इस दौर में जहाँ शासकों के ऊपर ई॰आई॰सी॰ का आधिपत्य हुआ। वहीं नई विचारधारा, आधुनिक शिक्षा, आधुनिक पुलिस, न्याय, सिविल (कार्यपालिका), शिक्षण संस्थान (कलकत्ता मदरसा, बंगाल कॉलेज) का आगमन हुआ।

⇓

भारतीय अधिक तार्किक हुए एवं इसके पश्चात सा॰ धा॰ सुधार आंदोलन का तेजी से प्रसार हुआ।

⇓

भारतीयों में राष्ट्रवाद की भावना पनपी।

⇓

देश में आधुनिक विचारधारा के प्रभाव में विद्रोह शुरू हुए।

इस प्रकार यह समय वास्तव में नई संभावनाओं के संक्रमण का दौर था जो दुर्भाग्य से एक और गुलामी के पश्चात मिला।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

**13.** The withdrawal of the Civil Disobedience Movement triggered a two-stage debate on the strategic course of India's freedom struggle. Elucidate.

**(250 words) 15**

सविनय अवज्ञा आंदोलन की वापसी ने भारत के स्वतंत्रता संघर्ष की रणनीतिक कार्यप्रणाली के संबंध में दो-चरणों वाली बहस को आरंभ कर दिया। स्पष्ट कीजिए।

मार्च, 1930 में दाण्डी यात्रा के साथ शुरू हुआ सविनय अवज्ञा आंदोलन गाँधी जी के नेतृत्व में संघर्ष - विराम - संघर्ष का अगला पड़ाव था जो काफी नए तेवरों को जन्म दिया।

इसने दो चरणों वाली बहस को शुरू किया -

(1) क्या अहिंसा एवं सत्याग्रह का मार्ग स्वाधीनता में सक्षम होगा - असहयोग आंदोलन की विफलता एवं अंग्रेजों के लगातार जारी हिंसक दबाव से जनता स्वाधीनता की उम्मीद खोती जा रही थी।

साइमन कमीशन का विरोध, उग्रवादी राष्ट्रवादियों की गतिविधियाँ एवं भगत सिंह की फाँसी से लोगों में आक्रोश था।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

→ गाँधी जी के आंदोलन वापसी से एक नई कांग्रेस में समाजवादी प्रवृत्ति का उदय हुआ। 1934 में इस कांग्रेस स्वराज पार्टी में लोहिया, जयप्रकाश नारायण जैसे लोग शामिल थे।

→ सुभाष बोस जैसे नेता भारत में त्वरित आंदोलन की तीव्रता के पक्षधर थे। सरकार में भाग लेने के कुछ अन्य लोग पक्षधर थे।

दूसरे चरण की बहस-

→ ~~आंद~~ कुछ आंदोलन के पश्चात कांग्रेस भारत में राजनीतिक प्रवेश के लिए तैयारी करने लगी।

1937 में विजय के पश्चात राष्ट्रीय स्तर का वैधता की प्राप्ति हुई। इससे सरकार पर दबाव बनाने की कोशिश तेज हुई।

कांग्रेस में देशी रियासतों को साथ में लेने का प्रयास तेज हुआ।

→ गाँवों में अधिवेशन (वेलगाँव अधिवेशन)

→ कांग्रेस पर समाजवाद का प्रभाव
⇓
कराची कांग्रेस में पूर्ण स्वराज का लक्ष्य
पहले घोषित था

→ लाहौर अधिवेशन में भी क्रांतिक प्रस्ताव
पारित हो चुका था।

इस प्रकार स्वाधीनता
लड़ाई अखिल समावेशी हुई।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

**14.** Throw light on the causes, course and outcomes of the Civil War, which followed the Russian Revolution. Also, bring out the reasons behind the Bolshevik victory. **(250 words) 15**

रूसी क्रांति के बाद हुए गृहयुद्ध के कारणों, गतिविधियों और परिणामों पर प्रकाश डालिए। साथ ही, बोल्शेविक विजय के कारणों को भी स्पष्ट कीजिए।

1917 में ज़ार शासन के पश्चात की रूसी क्रांति दुनिया में पूँजीवाद का एक नया विकल्प 'साम्यवाद' लेकर स्थापित हुई। मार्क्सवादी मूल्यों एवं विचारों पर आधारित यह क्रांति लोगों में संसाधनों के बँटवारे एवं सरकारी नियंत्रण पर आधारित थी।

गृहयुद्ध के कारण & गतिविधियाँ -

→ सत्ता का हस्तांतरण न करना

→ बोल्शेविकों द्वारा अहिंसक विद्रोह हेतु जनता को संगठित करना,

→ पहले से स्थापित सामंतों को जबरन उखाड़ फेंकना

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

→ निजी भूखण्डों पर कब्जा दिलाना

→ जन आक्रोश का उपयोग करना

⇓

पूरी व्यवस्था को अपने नियंत्रण में करने की कोशिश

परिणाम –

→ लेनिन के नेतृत्व में साम्यवादी सरकार की स्थापना,

→ संसाधनों के सामाजिक नियंत्रण की विचारधारा का क्रियान्वयन

बोल्शेविकों की नजरों, किसानों एवं शोषितों को एक में एकत्रित करने के कारण एवं निम्न वर्गीय हित के कारण लोगों की हित उस तरफ बढ़ी एवं बोल्शेविकों को विजय की प्राप्ति हुई।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

**15.** What are Glacial Lake Outburst Floods (GLOFs)? Highlighting the susceptibility of the Himalayan region to GLOFs, state the measures required to address them. **(250 words) 15**

ग्लेशियल लेक आउटबर्स्ट फ्लड्स (GLOFs) क्या हैं? GLOFs के प्रति हिमालयी क्षेत्र की सुभेद्यता पर प्रकाश डालते हुए, इनके समाधान के लिए आवश्यक उपायों का उल्लेख कीजिए।

ग्लेशियल लेक आउटबर्स्ट, हिमनदियों से युक्त क्षेत्रों में अचानक बर्फ के पिघलने के कारण हिमोढ़ (असंगठित हिमानी ढेर) के टूटने से जल के एकाएक तीव्र प्रवाह को कहते हैं।

यह क्रिया सामान्यतः तीव्र ढलान वाले हिमाच्छादित पर्वतों पर होती है। हाल में उत्तरकाशी (उत्तराखंड) में आई बाढ़ GLOFs ही थी।

GLOFs के प्रति हिमालयी क्षेत्र की सुभेद्यता -

'एशिया का वॉटर टॉवर' या 'तीसरा ध्रुव' — दुनिया में आर्कटिक एवं अंटार्कटिका के पश्चात् तीसरा सबसे वृहत् हिम वाला क्षेत्र है। जो इसे

विघलन के प्रति सुभेद्य बनाता है।

ii) विवर्तनिक गतिविधियाँ - भारतीय प्लेट का यूरेशियाई प्लेट के नीचे लगातार निक्षेपण हो रहा है जिससे पर्वत के ऊपर उठने की क्रिया जारी है। जो चट्टानों को अधिक असंगठित बनाता है।

• यह क्षेत्र इसी कारण भूकम्प प्रवण क्षेत्र है।

iii) जलवायुपरिवर्तन एवं भारी वारिश -
तीव्र विघलन एवं जलआपतन बढ़ने से GLOF की घटना के प्रति अधिक सुभेद्य.

iv) हिमालय में विकासात्मक गतिविधियाँ -

• बाँध निर्माण ⇒ जल आपतन का दबाव पहाड़ पर अधिक

• वनोन्मूलन - मृदा को पकड़ने की क्षमता में कमी

• सड़क निर्माण, अन्य जिससे

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

धरातल में धवस्थान

समाधान हेतु आवश्यक उपाय -

① अनुसंधान एवं डेटा संग्रहण - इससे वास्तविक जलवायु परिवर्तन को जानने में सहूलियत होगी,

② विकास को संधारणीय बनाना - SDG-13 (जलवायु कार्यवाही), SDG-14 (स्थलीय जीवन) के अनुरूप विकास को बढ़ावा,

③ पूर्वानुमान तंत्र बेहतर ⇒ नुकसान कम हो

④ वृक्षारोपण को बढ़ावा

⑤ पर्यटन को नियंत्रित - अधिक पर्यटन भी अधिक अवशोषित कर पिघलन को बढ़ाते है।

⑥ - ब्लैक कार्बन को नियंत्रित करना।

समस्त हिमालयी राष्ट्रों को साथ मिलकर एकजुट कार्य करने की आवश्यकता है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

**16.** Highlighting the significance of critical minerals, provide an account of their distribution in India and the world. **(250 words) 15**

महत्वपूर्ण खनिजों के महत्व को रेखांकित करते हुए, भारत और विश्व में उनके वितरण का विवरण प्रस्तुत कीजिए।

खनिज - पृथ्वी पर अयस्कों के साथ, स्वतंत्र रूप में पाए जाने वाले वह संसाधन हैं जो मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायता करते हैं।

खनिज
- धात्विक
  - लौह → लोहा, मैंगनीज
  - अलौह → सोना, चाँदी, प्लेटिनम,
- अधात्विक खनिज
  - कार्बनिक → पेट्रोलियम, कोयला,
  - सल्फर, नाइट्रोजन आदि

महत्वपूर्ण खनिजों का महत्व -

(1) ऊर्जा सुरक्षा - कोयला, जीवाश्म ईंधन के रूप में ऊर्जा प्रदान करता है।

- पेट्रोलियम, गैस वर्तमान में दुनिया के औद्योगिक विकास का आधार है।

(2) आधारभूत उद्योगों के लिए लोहा, मैंगनीज आदि महत्वपूर्ण खनिज हैं।

(3) अतीव स्वच्छ ऊर्जा के स्रोत - थोरियम, यूरेनियम में ऊर्जा की अपार क्षमता है।

(3) सामरिक महत्व - सुरक्षा के लिए (यूरेनियम - परमाणु हथियार के) ; वैश्विक महाशक्ति बनने के लिए खनिज की उपलब्धता वर्तमान में आवश्यक है।

- रूस अपने तेल पर यूरोप की 40% से अधिक निर्भरता का उपयोग यूक्रेन पर हमले के मद्देनजर कर रहा है।

(4) जीवन स्तर बढ़ाने में - भारत की ऊर्जा सुरक्षा पर बाह्य देशों पर निर्भरता इसके बाह्य वित्त असंतुलन को बढ़ाती है एवं राजस्व घाटा बढ़ाती है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

## विश्व में खनिज वितरण -

प० एशियाई खाड़ी देश, लाइबेरिया, मेक्सिको, द० USA, नाइजीरिया आदि में — पेट्रोलियम संसाधन

### भारत में खनिज वितरण -

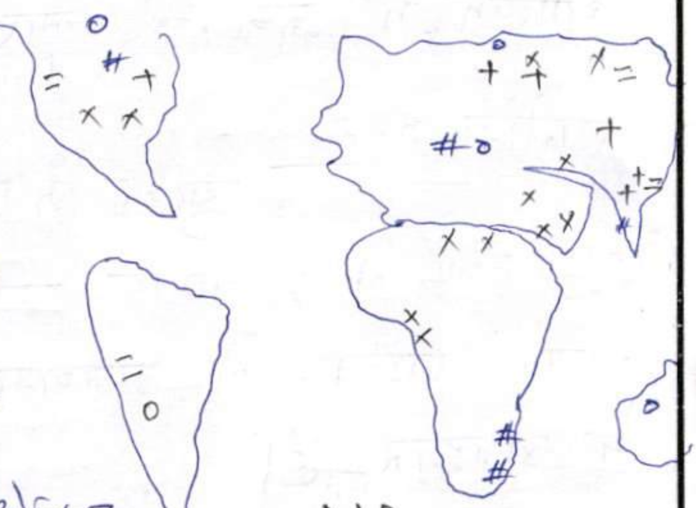

पेट्रोलियम = x x
यूरेनियम - o o
लौह - + +
कोयला - - -
सोना - # #

लौह खनिज - झारखंड, छोटा नागपुर पठार, हजारीबाग, सीधी

कोयला - छत्तीसगढ़, ओडिशा, प० बंगाल में।

सोना - कोलार (कर्नाटक)

थोरियम - मोनाजाइट रेत (केरल तट)

यूरेनियम - जादूगोड़ा, तुम्मलापल्ली, ललितपुर (U.P.), कडप्पा भी

प्राकृतिक गैस - ब्रह्मपुत्र, गोदावरी बेसिन, कैम्बे की खाड़ी

कच्चा तेल - मुम्बई हाई आदि

भारत वर्ष अपने खनिजों के अधिकाधिक दोहन को बढ़ाने हेतु नीलामी प्रणाली, पर्यावरण प्रभाव आकलन आदि में सुधार कर रहा है।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

**17.** Highlighting the importance of ice sheets, discuss the likely impact of their melting on the planet with special focus on India. **(250 words) 15**

हिम चादरों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए, भारत के विशेष संदर्भ में पृथ्वी पर उनके पिघलने के प्रभाव की विवेचना कीजिए।

पृथ्वी पर करोड़ो वर्षों से जमी हुई बर्फ की मोटी परतों को हिमचादर कहा जाता है। यह पृथ्वी पर उपस्थित जल के 2.5% से अधिक भाग को धारण करती है।

हिम-चादरों का महत्व -

i) यह अंटार्कटिक, आर्कटिक, हिमालय पर्वत एवं उच्च अक्षांशों में हिमनद, पर्माफ्रॉस्ट, बर्फ आदि रूप में उपस्थित हैं।

ii) स्वच्छ जल के स्रोत - यह पृथ्वी पर खारे जल के पश्चात् सबसे बड़े जल स्रोत एवं स्वच्छ जल के सबसे बड़े स्रोत हैं।

iii) बारहमासी नदियों के स्रोत - यह भारत में गंगा, सिंधु, ब्रह्मपुत्र; चीन-यांग्त्से; अफ्रीका आदि की सतत स्रोत है विश्व की

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

अधिकांश कि नदियाँ यहीं से निकलती हैं।
(गंगा से अमेजन नदी।

iv). कृषि अर्थव्यवस्था - सिंचाई हेतु जल उपलब्धता,

v). ध्रुवीय जानवरों - पेंगुइन, ध्रुवीय भालू जैसी हजारों प्रजातियों के आवास -

vi). पृथ्वी के जलवायु के लिए महत्वपूर्ण

टिपिंग प्वाइंट्स - इनमें परिवर्तन जलवायु को परिवर्तित करेगा जैसे - अंटार्कटिक, साइबेरिया आदि.

vii) - ओजोन के भंडार जैसे - साइबेरिया में प्राकृतिक गैस की बहुलता

विघलन का प्रभाव -

दुनिया पर -

→ जल स्तर में वृद्धि

अनेकों द्वीप डूब जायेंगे
⇓
भारी मानवीय विस्थापन
⇓
खाद्य सुरक्षा, शरणार्थी संकट

सफेदी क्षरीकरण, अम्लीकरण एवं विअम्लीकरण
⇓
सफेदी पारितंत्र प्रभावित
⇓
नकारात्मक फीडबैक
⇓
वैश्विक तापन में वृद्धि

→ हिम पिघलन से जैव-विविधता ह्रास,
चरम मौसमी घटनाएँ (एल-नीनो चक्र प्रभावित)
→ यह संसार पर बहुआयामी प्रभाव डालेगा

भारत पर प्रभाव –

→ तटीय राज्य (9) के किनारों के डूबने का खतरा ; मुम्बई शहर का डूबना
→ चक्रवातों से तटों पर भारी जन-धन हानि
→ उत्तरी भारत में सदानीरा नदियों का प्रवाह बाधित ⇒ जल असुरक्षा
⇓
कृषि पर संकट
→ पड़ोसी राज्यों से जल संकट पर तनाव
→ खाद्य असुरक्षा बढ़ने से सरकारी वित्त पर प्रभाव

हिमनदों के पिघलन को रोकने हेतु IPCC (1.5°C) के सीमा पर पहुँचाए सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

**18.** What are twin cyclones? Discuss the role of Rossby waves and Madden-Julian Oscillation (MJO) in their formation. **(250 words) 15**

जुड़वाँ चक्रवात (ट्विन साइक्लोन) क्या होते हैं? उनके निर्माण में रॉस्बी तरंगों और मैडेन-जूलियन दोलन (MJO) की भूमिका की विवेचना कीजिए।

एक वृहत् क्षेत्र में विभिन्न वायुराशियों के अधीन एक से अधिक केन्द्रों (निम्नदाब - चक्रवात की आंख) वाले चक्रवातों को जुड़वा चक्रवात कहा जाता है। यह प्राय: गतिशील प्रकृति के साथ वायुराशियों से ऊर्जा प्राप्त करते रहते हैं।

इनकी उपस्थिति अधिकांशत: उष्णकटिबंधीय (विषुवत के करीब) एवं उपध्रुवीय निम्नवायु दाब पेटियों में पाई जाती है।

जुड़वा चक्रवात के निर्माण में रॉस्बी तरंगों की भूमिका— रॉस्बी तरंगे प्राय: शीतोष्णकटिबंधीय ~~चक्रीय~~ चक्रवातों में पाई जाती हैं

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

ओ वाताग्र से निर्मित होते हैं।

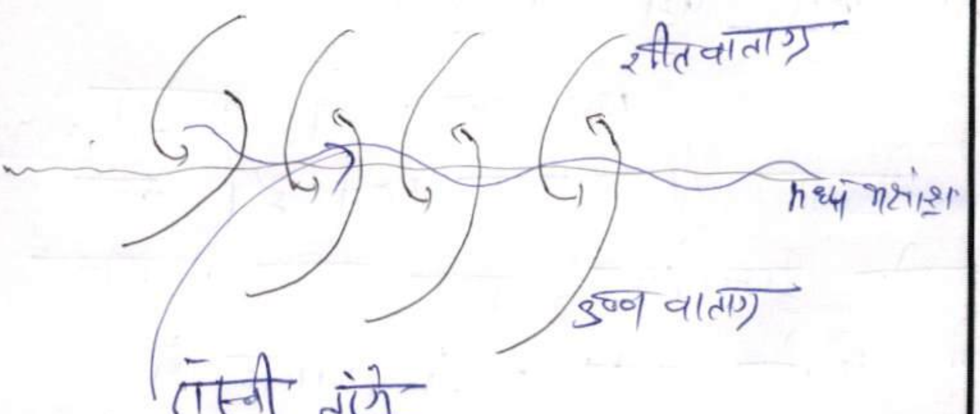


तस्मी तरंगे

यह तरंगे अपने साथ अनेक वायुराशियों के घूर्णन से निर्मित क्रमशः उच्च एवं निम्न दाब केन्द्रों को लक्षित किए रहती हैं। इन्ही केन्द्रों के आसपास शीतोष्ण कटिबंधीय चक्रवातों का निर्माण होता है कभी-2 एक वृहत् चक्रवात के भीतर दो केन्द्र विकसित हो जाते हैं जिससे 'जुड़वा चक्रवात' का निर्माण होता है।

मैडेन - जूलियन दोलन की भूमिका -

यह स्थिति विषुवतीय क्षेत्र के नजदीक पाई जाती है। यह विषुवत रेखा के आसपास से

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

वृत्त में उच्च एवं निम्न वायुदाब की पुनरावृत्ति बनी होती है।

यह भारत में मानसून की तीव्रता को प्रभावित करती है। जब भारतीय उपमहाद्वीप के पास इसकी निम्नदाब की स्थिति होती है तो भारत में चक्रवातों से वर्षा अच्छी होती है।

यही निम्न वायुदाबीय स्थिति हिन्द महासागर में कभी-कभी चक्रवातों के निर्माण के साथ संरेख हो जाती है जिससे यह जुड़वा उष्णकटिबंधीय चक्रवातों का निर्माण होता है।

अतः रॉस्बी तरंगें एवं MJO क्रमशः शीतोष्ण एवं उष्ण कटिबंधीय चक्रवात को प्रभावित करती हैं।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

**19.** Since independence, planning strategies for women's upliftment has evolved from welfare to development to empowerment. Elucidate. Also, discuss the role played by voluntary organizations in this context.

**(250 words) 15**

स्वतंत्रता के पश्चात, महिलाओं के उत्थान के लिए नियोजन रणनीतियां कल्याण से लेकर विकास और सशक्तीकरण तक विकसित हुई हैं। स्पष्ट कीजिए। साथ ही, इस संदर्भ में स्वयंसेवी संगठनों द्वारा निभाई गई भूमिका की भी विवेचना कीजिए।

भारतीय संविधान का अनुच्छेद-38 सरकार को प्रतिष्ठा, आय, अवसर की असमानता को कम करते हुए नागरिकों के कल्याण के लिए सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक न्याय को सुनिश्चित करने हेतु नीति निर्माण का अधिदेश देता है।

स्वतंत्रता के पश्चात महिलाओं के उत्थान की नीतियाँ -

कल्याणकारी नीतियाँ -

- अनुच्छेद-15 - धर्म, वंश, लिंग के आधार पर भेदभाव का निषेध
- सरकारी नियोजन में अवसर की समता - महिलाओं की रोजगार में भागीदारी बढ़ी

- प्रथम आम चुनाव में महिलाओं की 7% निर्वाचन सीटों पर उम्मीदवारी
- सार्वभौमिक मताधिकार की व्यवस्था (अनु 326)
  ⇓
  लोकतांत्रिक जवाबदेही.
- एकीकृत सामुदायिक विकास कार्यक्रम (1956)
  ⇓
  महिलाओं के स्वास्थ्य, शिक्षा का ख्याल किया गया

विकास प्रेरित नियोजन नीति -

1980 के बाद

महिलाओं के अधिकारों की मांग तेज हुई

- निर्धनता उन्मूलन (1980 में IRDP)
- कन्या भ्रूण हत्या पर रोक (1994)
- राष्ट्रीय महिला आयोग (1993)
- 73वां, 74वां संशोधन पंचायती राज सुधार एवं महिलाओं के लिए 1/3 आरक्षण (अनु 243D)

सशक्तिकरण -

- बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ
- कार्यस्थल पर उत्पीड़न निवारण एक्ट (2013)
- POCSO - 2012
- आर्थिक सशक्तिकरण — जनधन योजना

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

ग्राम महिलाओं के पास 80% खाता (NFHS-5)

- मुद्रा योजना ⇒ उद्यमिता बढ़ाना
- छात्रवृत्तियों द्वारा उच्च शिक्षा में भागीदारी बढ़ाना
- राजनीति में भागीदारी बढ़ी (17वीं लोकसभा में 82 महिला)

स्वयंसेवी संगठनों की भागीदारी -

→ महिला आंदोलनों के बढ़ने में - चिपको आंदोलन, निर्भया कांड के बाद

→ महिलाओं के अधिकारों की रक्षा में, • तीन तलाक का निरस्तीकरण

→ DDU-NRLM के तहत SHGs द्वारा महिलाओं का सशक्तीकरण

→ कौशल प्रशिक्षण में

→ बाल-विवाह आदि कुरीतियाँ मिटाने में,

आज स्वयंसेवी संगठन नागरिक समाज के सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

**20.** How far do you agree with the view that globalisation has aggravated the challenges faced by the poor in India? **(250 words) 15**

आप इस विचार से कहां तक सहमत हैं कि वैश्वीकरण ने भारत में निर्धनों द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियों को और बढ़ा दिया है?

भारत में नीति आयोग के अनुसार निर्धनता 10% है। वहीं विश्वबैंक ने भारत द्वारा 2011 में 22% से 2019 में 10% करने पर प्रशंसा जताया है।

वैश्वीकरण पूंजी, श्रम, वस्तु एवं सेवा के एकीकरण द्वारा दुनिया के देशों को एक साथ करने की प्रक्रिया है।

भारतीय निर्धनों की चुनौतियां बढ़ाने में वैश्वीकरण का योगदान –

① गहन पूंजी निवेश – इसके द्वारा मशीनों के स्वचालित इस्तेमाल ने लोगों के लिए रोजगार अवसरों को सीमित कर दिया है। भारत में OPSS – 6% से अधिक बेरोजगारों & निर्धनों के लिए अवसर सीमित करता है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

② औद्योगीकरण से प्रतिस्पर्धा - भारत के अधिकांश विनिर्माण MSME क्षेत्रक द्वारा किये जाते है वह वैश्विक उत्पादों के प्रतिस्पर्धा में नहीं टिक पा रहे एवं क्षति का सामना। इनमें अधिकांश गरीब असंगठित लोग शामिल होते हैं।

③ पारंपरिक ब्रांड शिल्पों को नुकसान - देशी डिलीनों, जनजातीय शिल्पों की माँग कम हुई है।
⇓
उनके आय विकल्प सीमित

④ वैश्वीकरण माँग आधारित व्यवस्था है जिसमें आवश्यकताओं का ख्याल नहीं रखा जाता है।

⑤ उपभोक्तावादी प्रवृत्ति ने गरीबों के लिए आवश्यकताओं की पूर्ति को प्रभावित किया है। जैसे - ऑनलाइन ड्रग। उनकी बिमारियों का इलाज नहीं।

निर्धनों के लिए अवसर -

• प्रतिस्पर्धा के कारण कम मूल्य पर वस्तुओं की उपलब्धता हुई है। कम आय के

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

व्यक्ति के हाथ में मोबाइल (डिजिटलीकरण की ओर प्रयास) वैश्वीकरण के कारण हुआ है।

→ विकल्पों का विस्तार हुआ है। जिससे निर्धन व्यक्ति भी जरूरत की चीजों को कम मूल्य पर ले सकता है।

→ इनके जीवन स्तर में सुधार आया है आज वह तकनीकी प्रयोग से विश्व की खबरों से जागरूक हैं।

⇓

सामाजिक सशक्तीकरण

→ आधुनिक विचारों का प्रभाव बढ़ा है।

→ रोग, एकलवादी व्यवस्था आदि प्रवृत्तियों का उदय हुआ है।

समग्र तौर पर वैश्वीकरण ने घरेलू पारंपरिक उद्योगों के संरक्षण को समाप्त कर रोजगार की समाप्ति किया है। जिससे लोगों में दीर्घकालिक निर्धनता (कौशल के अभाव में) बढ़ी है।